www.ijarp.com ISSN 2456-9992 Page: 01-13

Research Article

International Journal Advanced Research Publications

Volume: 02
Issue: 11

# बोकारो जिले का सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य: औद्योगीकरण और महिलाओं की सामाजिक स्थिति का एक विश्लेषण

***अनुपमा कुमारी, संतोष सालवे**

समाजशास्त्र विभाग,मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल

**Article Received: 23 September 2026, Article Revised: 13 October 2026, Published on: 02 November 2026**

***Corresponding Author: अनुपमा कुमारी**

समाजशास्त्र विभाग,मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल

Doi: https://doi-doi.org/101555/ijarp.2694

## सारांश (ABSTRACT)

बोकारो जिला झारखण्ड के उन विशिष्ट जिलों में से है जहाँ प्राकृतिक संसाधनों, खनन, भारी उद्योग, नगरीकरण और सामाजिक विविधता ने मिलकर एक विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक संरचना का निर्माण किया है। विशेष रूप से बोकारो स्टील प्लांट की स्थापना ने जिले के आर्थिक, जनसांख्यिकीय, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए। एक अपेक्षाकृत ग्रामीण एवं कृषि-प्रधान क्षेत्र से बोकारो का विकास एक महत्वपूर्ण औद्योगिक एवं शहरी केंद्र के रूप में हुआ। इस परिवर्तन के साथ देश के विभिन्न भागों से श्रमिकों, तकनीकी विशेषज्ञों, अधिकारियों और व्यापारिक समुदायों का आगमन हुआ, जिसके परिणामस्वरूप जिले में बहुभाषी, बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक सामाजिक संरचना विकसित हुई। यह शोध-लेख बोकारो जिले के सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करते हुए विशेष रूप से औद्योगीकरण और महिलाओं की सामाजिक स्थिति के अंतर्संबंध पर केंद्रित है। अध्ययन में जनसंख्या संरचना, ग्रामीण-शहरी विभाजन, जातीय एवं जनजातीय संरचना, धर्म, परिवार एवं विवाह, शिक्षा, महिला साक्षरता, स्वास्थ्य एवं पोषण, रोजगार तथा स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के लिए मुख्यतः Census of India 2011, District Census Handbook, बोकारो जिला प्रशासन, Steel Authority of India Limited तथा National Family Health Survey जैसे द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बोकारो का औद्योगीकरण महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्थागत संपर्क, वित्तीय समावेशन, सेवा क्षेत्र और सामुदायिक सहभागिता के नए अवसरों का आधार बना है। तथापि औपचारिक औद्योगिक रोजगार में महिलाओं की भागीदारी अभी भी सीमित है और महिला सशक्तीकरण पर वर्ग, जाति/जनजाति, ग्रामीण-शहरी निवास, शिक्षा तथा परिवार संरचना का प्रभाव

बना हुआ है। अतः औद्योगिक विकास को स्वतः महिला सशक्तीकरण का पर्याय नहीं माना जा सकता। वास्तविक महिला सशक्तीकरण के लिए शिक्षा, कौशल, सुरक्षित रोजगार, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा, वित्तीय स्वतंत्रता तथा निर्णय-निर्माण में भागीदारी आवश्यक है।

**प्रमुख शब्द:** बोकारो, औद्योगीकरण, बोकारो स्टील प्लांट, महिलाएँ, सामाजिक स्थिति, महिला सशक्तीकरण, नगरीकरण, रोजगार, शिक्षा, स्वयं सहायता समूह।

## 1. प्रस्तावना

भारत में औद्योगीकरण केवल आर्थिक उत्पादन बढ़ाने की प्रक्रिया नहीं रहा है, बल्कि इसने सामाजिक संरचना, नगरीकरण, प्रवासन, परिवार, शिक्षा, रोजगार और लैंगिक संबंधों को भी प्रभावित किया है। झारखण्ड इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण उदाहरण है क्योंकि राज्य की अर्थव्यवस्था ऐतिहासिक रूप से खनिज संसाधनों तथा खनन-आधारित उद्योगों से जुड़ी रही है। इसी संदर्भ में बोकारो जिले का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। बोकारो का वर्तमान सामाजिक स्वरूप उसके औद्योगिक विकास से गहराई से जुड़ा है। जिले में लौह-अयस्क और कोयले जैसे संसाधनों की क्षेत्रीय उपलब्धता, दामोदर घाटी की भौगोलिक स्थिति और स्वतंत्रता के बाद सार्वजनिक क्षेत्र के भारी उद्योगों की स्थापना ने इसे राष्ट्रीय औद्योगिक मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। बोकारो स्टील प्लांट की स्थापना इस परिवर्तन की केंद्रीय घटना रही। Steel Authority of India Limited के अनुसार बोकारो स्टील प्लांट की परियोजना 1960 के दशक में विकसित हुई, निर्माण कार्य 1968 में प्रारंभ हुआ और 1970 के दशक में उत्पादन शुरू हुआ। संयंत्र के विकास के साथ एक नियोजित औद्योगिक नगर तथा उससे संबंधित आवासीय, शैक्षिक, स्वास्थ्य और सामाजिक संस्थाओं का भी विकास हुआ। (sail.co.in)

इस औद्योगिक परिवर्तन का प्रभाव महिलाओं पर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। औद्योगिक अर्थव्यवस्था ने परिवारों की आय और जीवन-स्तर में परिवर्तन किया, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच बढ़ाई तथा महिलाओं के लिए सार्वजनिक जीवन और सेवा क्षेत्र में नए अवसर पैदा किए। दूसरी ओर भारी उद्योगों की पुरुष-प्रधान रोजगार संरचना, घरेलू जिम्मेदारियाँ और पारंपरिक लैंगिक मान्यताएँ महिलाओं की औपचारिक आर्थिक भागीदारी को सीमित करती रही हैं।

अतः बोकारो को केवल "औद्योगिक जिला" के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। इसे एक ऐसे **औद्योगिक-सामाजिक संक्रमण क्षेत्र** के रूप में समझना आवश्यक है जहाँ पारंपरिक ग्रामीण, जनजातीय एवं सामुदायिक संरचनाएँ आधुनिक औद्योगिक एवं शहरी संस्थाओं के साथ अंतःक्रिया कर रही हैं।

## 2. अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध-लेख के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. बोकारो जिले की सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना का विश्लेषण करना।
2. जिले के औद्योगीकरण, विशेषकर बोकारो स्टील प्लांट, के सामाजिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी संरचना के संदर्भ में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करना।
4. महिला शिक्षा, साक्षरता, स्वास्थ्य और रोजगार की स्थिति का अध्ययन करना।
5. जातीय, जनजातीय एवं धार्मिक विविधता का महिलाओं की सामाजिक स्थिति से संबंध समझना।
6. स्वयं सहायता समूहों एवं अन्य संस्थागत अवसरों की भूमिका का विश्लेषण करना।
7. औद्योगीकरण और महिला सशक्तीकरण के बीच संबंध का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

## 3. शोध-पद्धति (METHODOLOGY)

यह अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (descriptive and analytical) प्रकृति का है। अध्ययन में प्राथमिक सर्वेक्षण के बजाय उपलब्ध द्वितीयक आँकड़ों एवं प्रकाशित दस्तावेजों का उपयोग किया गया है।

मुख्य स्रोतों में निम्न शामिल हैं—

- Census of India 2011;
- District Census Handbook, Bokaro;
- Primary Census Abstract;
- Scheduled Caste एवं Scheduled Tribe Census Tables;
- बोकारो जिला प्रशासन की आधिकारिक वेबसाइट;
- Steel Authority of India Limited (SAIL);
- National Family Health Survey (NFHS);
- Government of India तथा Government of Jharkhand की संबंधित रिपोर्टें।

जनसंख्या, साक्षरता, ग्रामीण-शहरी संरचना, लिंगानुपात और कार्य-संबंधी आँकड़ों के लिए Census 2011 को प्राथमिक स्रोत माना गया है। Census District Census Handbook में बोकारो की ग्राम, नगर, जनसंख्या, साक्षरता, सामाजिक समूह और कार्य-संबंधी विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। (censusindia.gov.in)

अध्ययन में औद्योगीकरण को केवल औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से नहीं, बल्कि रोजगार, नगरीकरण, प्रवासन, शिक्षा, परिवार, सामाजिक वर्ग और महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन के व्यापक सामाजिक संदर्भ में देखा गया है।

## 4. बोकारो का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ

बोकारो झारखण्ड के उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल में स्थित है। जिले का क्षेत्रफल लगभग 2,883 वर्ग किलोमीटर है और इसका अधिकांश भूभाग छोटानागपुर पठार का हिस्सा है। दामोदर नदी जिले की भौगोलिक एवं औद्योगिक संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिले में कृषि, कोयला, खनन और औद्योगिक गतिविधियाँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। (bokaro.nic.in)

बोकारो का आधुनिक इतिहास औद्योगिकीकरण के साथ निर्णायक रूप से बदलता है। स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने भारी उद्योगों को आर्थिक विकास और आत्मनिर्भरता का आधार माना। इसी नीति के अंतर्गत बोकारो में एकीकृत इस्पात संयंत्र की स्थापना की गई।

बोकारो स्टील प्लांट के विकास ने क्षेत्र को एक ग्रामीण-खनन अर्थव्यवस्था से आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित किया। इसके साथ आवासीय सेक्टर, विद्यालय, अस्पताल, बाजार, सड़कें, खेल संस्थाएँ और अन्य सामाजिक अवसंरचनाएँ विकसित हुईं। (sail.co.in)

यह परिवर्तन केवल आर्थिक नहीं था। औद्योगिक परियोजना ने देश के विभिन्न भागों से लोगों को बोकारो की ओर आकर्षित किया। इस प्रवासन के परिणामस्वरूप स्थानीय आदिवासी और ग्रामीण समाज के साथ विभिन्न भाषायी, धार्मिक और क्षेत्रीय समुदायों का संपर्क बढ़ा।

## 5. जनसांख्यिकीय एवं सामाजिक संरचना

Census 2011 के अनुसार बोकारो जिले की कुल जनसंख्या 20,62,330 थी, जिसमें 10,72,807 पुरुष और 9,89,523 महिलाएँ थीं। लिंगानुपात 922 महिलाएँ प्रति 1,000 पुरुष था। जनसंख्या घनत्व लगभग 715 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था। (censusindia.gov.in)

बोकारो की जनसांख्यिकीय संरचना औद्योगिक प्रवासन से प्रभावित रही है। औद्योगिक रोजगार ने विभिन्न राज्यों से तकनीकी विशेषज्ञों, श्रमिकों और व्यापारियों को आकर्षित किया। इसके कारण जिले में हिन्दी के साथ संताली, बंगाली और अन्य भाषायी समूहों की उपस्थिति महत्वपूर्ण है।

जातीय एवं जनजातीय संरचना भी बोकारो की सामाजिक विविधता का महत्वपूर्ण आयाम है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की पर्याप्त आबादी जिले की सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका रखती है। Census 2011 में इन समुदायों के लिए पृथक जनसंख्या, लिंग, साक्षरता और कार्य-संबंधी आँकड़े उपलब्ध हैं। (censusindia.gov.in)

यह सामाजिक विविधता महिलाओं की स्थिति को समझने में महत्वपूर्ण है क्योंकि विभिन्न सामाजिक समूहों में विवाह, शिक्षा, रोजगार, परिवार और लैंगिक भूमिकाओं से संबंधित मान्यताएँ अलग-अलग हो सकती हैं।

### 6. ग्रामीण-शहरी संरचना और सामाजिक परिवर्तन

Census 2011 District Census Handbook के अनुसार बोकारो में 10,78,686 ग्रामीण और 9,83,644 शहरी आबादी थी। (censusindia.gov.in)

यह तथ्य बोकारो की विशिष्ट संरचना को दर्शाता है। जिला औद्योगिक होने के बावजूद इसकी ग्रामीण आबादी अत्यंत महत्वपूर्ण है। परिणामतः यहाँ दो सामाजिक संसार समानांतर रूप से दिखाई देते हैं— ग्रामीण बोकारो, जहाँ कृषि, पशुपालन, श्रम, वनोपज और पारंपरिक सामाजिक संबंध प्रमुख हैं; और औद्योगिक-शहरी बोकारो, जहाँ वेतनभोगी रोजगार, सेवा क्षेत्र, शिक्षा, तकनीकी कौशल और आधुनिक जीवनशैली का प्रभाव अधिक है।

बोकारो स्टील सिटी इसका सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण है। यह एक योजनाबद्ध औद्योगिक नगर के रूप में विकसित हुआ, जबकि चास और फुसरो का विकास व्यापार, बाजार, परिवहन और खनन गतिविधियों से अधिक जुड़ा रहा।

महिलाओं की स्थिति में ग्रामीण-शहरी अंतर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। शहरी महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग और रोजगार की संस्थागत पहुँच अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक गतिविधियाँ कृषि, पशुपालन, मजदूरी और SHGs पर अधिक निर्भर हैं।

### 7. औद्योगीकरण और सामाजिक जीवन

बोकारो के औद्योगिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक परिणाम नगरीकरण और सामाजिक गतिशीलता है।

औद्योगिक रोजगार के कारण ग्रामीण आबादी के साथ नए प्रवासी समुदायों का संपर्क हुआ। इससे पारंपरिक सामाजिक संबंधों में परिवर्तन आया और पेशा तथा शिक्षा सामाजिक पहचान के नए आधार बने।

औद्योगिक कर्मचारियों के लिए नियमित वेतन, आवास, चिकित्सा और शिक्षा सुविधाओं ने एक संगठित मध्यम वर्ग के विकास को बढ़ावा दिया। यह वर्ग बच्चों की शिक्षा, आधुनिक आवास, स्वास्थ्य और उपभोग के नए मानकों से जुड़ा।

इसी समय ठेका श्रमिकों, असंगठित श्रमिकों और ग्रामीण समुदायों की आर्थिक स्थिति अलग रही। इसलिए बोकारो में औद्योगीकरण ने सामाजिक गतिशीलता के साथ-साथ सामाजिक असमानता के नए रूप भी उत्पन्न किए।

औद्योगिक नगर की सामाजिक संरचना में सामुदायिक संस्थाओं, क्लबों, विद्यालयों, बाजारों और सांस्कृतिक संगठनों की भूमिका बढ़ी। विभिन्न राज्यों से आए लोगों ने अपने त्योहारों और सांस्कृतिक परंपराओं को स्थानीय जीवन में शामिल किया।

इस प्रकार औद्योगीकरण ने बोकारो को एक बहुसांस्कृतिक शहरी समाज में परिवर्तित किया।

### 8. परिवार, विवाह और लैंगिक संबंध

औद्योगिक समाज में परिवार की संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। औद्योगिक आवास और शहरी जीवनशैली ने नाभिकीय परिवारों के विकास को बढ़ावा दिया। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्रों में संयुक्त एवं विस्तारित परिवारों का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक बना रहा।

विवाह अभी भी सामाजिक संगठन का महत्वपूर्ण आधार है। जाति, समुदाय और रिश्तेदारी विवाह संबंधों को प्रभावित करते हैं, हालांकि शहरी शिक्षित वर्गों में शिक्षा, रोजगार और व्यक्तिगत पसंद का महत्व बढ़ रहा है।

महिलाओं के लिए विवाह और रोजगार के बीच संतुलन एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। औद्योगिक परिवारों में शिक्षा के अवसर बढ़ने के बावजूद घरेलू कार्य और बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी अक्सर महिलाओं पर केंद्रित रहती है।

इसलिए महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन को केवल शिक्षा या रोजगार से नहीं बल्कि घरेलू निर्णय-क्षमता, वैवाहिक संबंध, कार्य-विभाजन और आर्थिक स्वतंत्रता के संदर्भ में देखना आवश्यक है।

### 9. शिक्षा और महिला साक्षरता

Census 2011 के अनुसार बोकारो की कुल साक्षरता 72.01 प्रतिशत थी। पुरुष साक्षरता 82.51 प्रतिशत और महिला साक्षरता 60.63 प्रतिशत थी। (censusindia.gov.in)

ये आँकड़े बताते हैं कि औद्योगिक विकास ने शिक्षा के लिए बेहतर वातावरण अवश्य बनाया, लेकिन लैंगिक शिक्षा-अंतर समाप्त नहीं हुआ।

बोकारो स्टील प्लांट से जुड़े औद्योगिक नगर में विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थाओं का विकास हुआ। औद्योगिक परिवारों में शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का महत्वपूर्ण माध्यम बनी। विशेष रूप से बेटियों की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आया।

फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा को आर्थिक स्थिति, घरेलू कार्य, विवाह, परिवहन और सामाजिक मान्यताओं जैसी समस्याएँ प्रभावित कर सकती हैं।

इसलिए महिला साक्षरता को केवल मानव पूँजी का संकेतक नहीं बल्कि **महिला स्वायत्तता और सामाजिक परिवर्तन का सूचक** माना जाना चाहिए।

### 10. महिला स्वास्थ्य एवं पोषण

बोकारो के औद्योगिक क्षेत्रों में स्वास्थ्य संस्थाओं का विकास हुआ है। औद्योगिक कर्मचारी परिवारों को संस्थागत चिकित्सा सुविधाओं की अपेक्षाकृत बेहतर पहुँच मिली। लेकिन ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर आबादी के स्वास्थ्य परिणाम समान नहीं हैं।

महिलाओं के स्वास्थ्य में एनीमिया, मातृ स्वास्थ्य, किशोरियों का पोषण और प्रजनन स्वास्थ्य प्रमुख प्रश्न हैं। NFHS-5 ने जिला स्तर पर स्वास्थ्य और पोषण से संबंधित अनेक संकेतकों के अध्ययन का आधार प्रदान किया। (mohfw.gov.in)

यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि औद्योगिक विकास और स्वास्थ्य परिणामों के बीच सीधा संबंध नहीं है। किसी परिवार की आय बढ़ने के बावजूद यदि महिलाओं के भोजन, स्वास्थ्य निर्णय या संसाधनों पर नियंत्रण सीमित है, तो उनका स्वास्थ्य अपेक्षित रूप से बेहतर नहीं हो सकता।

अतः महिला स्वास्थ्य का विश्लेषण "आय + पोषण + स्वास्थ्य सेवाएँ + घरेलू निर्णय-क्षमता + कार्यभार" के संयुक्त संदर्भ में किया जाना चाहिए।

### 11. महिलाओं की रोजगार स्थिति

बोकारो का औद्योगिक चरित्र महिलाओं के रोजगार की स्थिति को समझने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। पहली दृष्टि में यह अपेक्षा की जा सकती है कि औद्योगिक जिले में महिलाओं की रोजगार भागीदारी अधिक होगी, किंतु वास्तविकता अधिक जटिल है।

भारी उद्योगों में तकनीकी एवं उत्पादन संबंधी कार्य ऐतिहासिक रूप से पुरुष-प्रधान रहे हैं। शिफ्ट आधारित कार्य, कार्यस्थल की दूरी, शारीरिक श्रम, सुरक्षा और पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं ने महिलाओं की प्रत्यक्ष औद्योगिक भागीदारी को सीमित किया।

इसके बावजूद महिलाएँ उद्योग से उत्पन्न अर्थव्यवस्था से अनेक तरीकों से जुड़ी हैं—

- शिक्षा;
- स्वास्थ्य;
- बैंकिंग;

- प्रशासन;
- खुदरा व्यापार;
- घरेलू उद्यम;
- सेवा क्षेत्र;
- स्वरोजगार;
- स्वयं सहायता समूह;
- असंगठित कार्य।

इस प्रकार बोकारो में महिलाओं का औद्योगिक संबंध अक्सर प्रत्यक्ष उत्पादन के बजाय औद्योगिक अर्थव्यवस्था के सहायक एवं सेवा क्षेत्रों के माध्यम से दिखाई देता है।

**12. औद्योगीकरण और महिलाओं की सामाजिक स्थिति**

औद्योगीकरण ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के लिए एक संरचनात्मक आधार बनाया। नियमित औद्योगिक रोजगार से परिवार की आर्थिक सुरक्षा बढ़ी, जिससे बेटियों की शिक्षा और महिलाओं के स्वास्थ्य पर निवेश की संभावना बढ़ी।

औद्योगिक नगरों में महिलाओं को निम्नलिखित अवसर प्राप्त हुए—

- विद्यालय एवं उच्च शिक्षा;
- अस्पताल एवं स्वास्थ्य सेवाएँ;
- सार्वजनिक परिवहन;
- बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाएँ;
- रोजगार एवं प्रशिक्षण;
- सांस्कृतिक संस्थाएँ;
- सामुदायिक संगठन;
- राजनीतिक सहभागिता।

फिर भी औद्योगिक समाज में महिला की स्थिति विरोधाभासी रही। महिला को आधुनिक शिक्षा और रोजगार के अवसर मिलते हैं, लेकिन परिवार और समाज की पारंपरिक अपेक्षाएँ पूरी तरह समाप्त नहीं होतीं।

इसलिए बोकारो का अनुभव यह संकेत देता है कि **आधुनिकीकरण और लैंगिक समानता एक ही प्रक्रिया नहीं हैं।**

औद्योगिक समाज में महिलाओं की स्थिति तब अधिक मजबूत होती है जब आर्थिक संसाधनों पर उनका नियंत्रण, निर्णय-क्षमता और सामाजिक संस्थाओं में सहभागिता भी बढ़ती है।

### 13. स्वयं सहायता समूह और महिला सशक्तीकरण

ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वयं सहायता समूह बोकारो में सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण साधन बनकर उभरे हैं। NRLM के अंतर्गत बोकारो में हजारों SHGs के गठन और महिलाओं को बैंक क्रेडिट तथा प्रशिक्षण से जोड़ने का उल्लेख जिला प्रशासन करता है। (bokaro.nic.in)

SHGs महिलाओं को केवल ऋण नहीं देते, बल्कि सामाजिक पूँजी का निर्माण भी करते हैं। नियमित समूह बैठकों के माध्यम से महिलाएँ बचत, ऋण, सरकारी योजनाओं, स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और सामाजिक समस्याओं पर चर्चा करती हैं।

इन समूहों का महत्व चार स्तरों पर देखा जा सकता है—

**आर्थिक सशक्तीकरण:** आय-सृजन और स्वरोजगार।

**सामाजिक सशक्तीकरण:** सामूहिक नेटवर्क और सामाजिक समर्थन।

**राजनीतिक सशक्तीकरण:** पंचायत और स्थानीय शासन में सहभागिता।

**मनोवैज्ञानिक सशक्तीकरण:** आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता।

इस प्रकार SHGs ग्रामीण महिलाओं को परिवार की निजी सीमा से बाहर निकालकर सामुदायिक सार्वजनिक क्षेत्र से जोड़ने में योगदान करते हैं।

### 14. बोकारो की महिलाओं की सामाजिक स्थिति: एक समेकित विश्लेषण

बोकारो की महिलाओं की सामाजिक स्थिति को पाँच प्रमुख आयामों के आधार पर समझा जा सकता है।

#### 14.1 शिक्षा

महिला साक्षरता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, लेकिन पुरुषों की तुलना में अंतर बना हुआ है। ग्रामीण-शहरी अंतर भी महत्वपूर्ण है।

### 14.2 रोजगार

महिलाओं की प्रत्यक्ष औद्योगिक रोजगार में भागीदारी सीमित है, लेकिन सेवा, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वरोजगार और SHGs में उनकी भूमिका बढ़ रही है।

### 14.3 स्वास्थ्य

औद्योगिक क्षेत्रों में स्वास्थ्य संस्थाओं की उपलब्धता बेहतर है, लेकिन पोषण और एनीमिया जैसी समस्याएँ अभी भी महत्वपूर्ण हैं।

### 14.4 सामाजिक सहभागिता

शिक्षा, स्वयं सहायता समूह, पंचायत और डिजिटल संचार महिलाओं के सार्वजनिक जीवन में प्रवेश के नए साधन बने हैं।

### 14.5 पारिवारिक स्वायत्तता

महिलाओं की शिक्षा और आय बढ़ने से पारिवारिक निर्णयों में उनकी भूमिका बढ़ने की संभावना है, लेकिन घरेलू लैंगिक श्रम-विभाजन अभी भी महत्वपूर्ण बाधा है।

इन सभी आयामों को साथ देखने पर स्पष्ट होता है कि बोकारो की महिलाओं की स्थिति **परंपरा और आधुनिकता के बीच संक्रमणशील** है।

## 15. चर्चा (DISCUSSION)

बोकारो का सामाजिक अनुभव औद्योगीकरण और महिला सशक्तीकरण के संबंध को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। सामान्यतः औद्योगीकरण को आधुनिकता, रोजगार और सामाजिक गतिशीलता से जोड़ा जाता है। किंतु बोकारो का अनुभव बताता है कि औद्योगिक विकास का लाभ लैंगिक रूप से समान नहीं होता।

बोकारो स्टील प्लांट ने हजारों परिवारों को स्थिर रोजगार और संस्थागत सुविधाएँ प्रदान कीं। इससे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन-स्तर में सुधार हुआ। इसका अप्रत्यक्ष लाभ महिलाओं को भी मिला।

लेकिन उद्योग के मुख्य उत्पादन क्षेत्र में महिलाओं की सीमित उपस्थिति यह दर्शाती है कि आर्थिक संरचना स्वयं लैंगिक रूप से तटस्थ नहीं होती। भारी उद्योग, तकनीकी कार्य और शिफ्ट रोजगार की संरचना ऐतिहासिक रूप से पुरुष श्रम के अनुरूप विकसित हुई।

इस स्थिति को **"औद्योगिक आधुनिकीकरण और लैंगिक पुनर्संरचना के बीच अंतर"** के रूप में समझा जा सकता है।

इसी प्रकार बोकारो में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच अंतर यह दर्शाता है कि औद्योगिक विकास के लाभ स्थानिक रूप से भी असमान हैं। बोकारो स्टील सिटी की संस्थागत सुविधाओं और दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के अवसरों में महत्वपूर्ण अंतर हो सकता है।

इसलिए महिला सशक्तीकरण की नीति में केवल औद्योगिक रोजगार बढ़ाना पर्याप्त नहीं है। इसके साथ—

- कौशल विकास,
- सुरक्षित परिवहन,
- बाल देखभाल,
- कार्यस्थल पर लैंगिक सुरक्षा,
- वित्तीय समावेशन,
- स्वास्थ्य एवं पोषण,
- डिजिटल शिक्षा,
- उद्यमिता,
- SHGs और
- राजनीतिक सहभागिता को भी जोड़ा जाना आवश्यक है।

## 16. निष्कर्ष

बोकारो जिले का सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य उसके औद्योगिक विकास से गहराई से निर्मित हुआ है। बोकारो स्टील प्लांट और कोयला-आधारित अर्थव्यवस्था ने जिले को ग्रामीण-आधारित समाज से एक जटिल औद्योगिक-शहरी समाज में परिवर्तित किया। इस परिवर्तन ने नगरीकरण, प्रवासन, शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवा क्षेत्र और मध्यम वर्ग के विकास को गति दी।

Census 2011 के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 20.62 लाख थी और महिला साक्षरता 60.63 प्रतिशत थी। (censusindia.gov.in) ये आँकड़े यह दिखाते हैं कि सामाजिक परिवर्तन के बावजूद लैंगिक असमानताएँ समाप्त नहीं हुई थीं।

बोकारो की महिलाओं की स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, स्वयं सहायता समूह, पंचायत और सेवा क्षेत्र ने महिलाओं के लिए नए अवसर पैदा किए हैं। लेकिन प्रत्यक्ष औद्योगिक रोजगार में उनकी सीमित भागीदारी, घरेलू कार्यभार, ग्रामीण-शहरी अंतर और सामाजिक मान्यताएँ अभी भी चुनौती हैं।

इस अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि **बोकारो में औद्योगीकरण ने महिला सशक्तीकरण के लिए आवश्यक सामाजिक और संस्थागत परिस्थितियों का निर्माण किया है, लेकिन औद्योगीकरण अपने-आप में महिला सशक्तीकरण सुनिश्चित नहीं करता।**

वास्तविक सशक्तीकरण तब संभव है जब महिलाओं की शिक्षा के साथ-साथ उनके पास आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण, सुरक्षित रोजगार, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा, संस्थागत पहुँच और पारिवारिक एवं सार्वजनिक निर्णयों में प्रभावी भागीदारी हो।

इस दृष्टि से बोकारो की महिलाओं की सामाजिक स्थिति को **"औद्योगिक आधुनिकता, ग्रामीण परंपरा और लैंगिक परिवर्तन के अंतर्संबंध"** के रूप में समझना अधिक उपयुक्त होगा।

## संदर्भ सूची (REFERENCES)


1. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). Census of India 2011: District Census Handbook, Bokaro, Jharkhand, Part A & Part B. Ministry of Home Affairs, Government of India. (censusindia.gov.in)
2. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). Primary Census Abstract: Bokaro District, Jharkhand. Government of India. (censusindia.gov.in)
3. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). Primary Census Abstract for Scheduled Castes: Bokaro District. Government of India. (censusindia.gov.in)
4. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). Primary Census Abstract for Scheduled Tribes: Bokaro District. Government of India. (censusindia.gov.in)
5. District Administration, Bokaro, Government of Jharkhand. District Profile. Government of Jharkhand. (bokaro.nic.in)
6. District Administration, Bokaro, Government of Jharkhand. History and Physical Features of Bokaro District. Government of Jharkhand. (bokaro.nic.in)
7. District Administration, Bokaro, Government of Jharkhand. Development Programmes and National Rural Livelihood Mission. Government of Jharkhand. (bokaro.nic.in)
8. Steel Authority of India Limited (SAIL). About Bokaro Steel Plant. Government of India, Ministry of Steel. (sail.co.in)
9. Steel Authority of India Limited (SAIL). Particulars of Bokaro Steel Plant: Organization, Functions and Duties. Government of India. (sail.co.in)

10. Ministry of Health and Family Welfare, Government of India. (2021). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21. Government of India. (mohfw.gov.in)
11. Ministry of Rural Development, Government of India. National Rural Livelihoods Mission (NRLM): Guidelines and Reports. Government of India.
12. Government of Jharkhand. Jharkhand Economic Survey. Department of Finance, Government of Jharkhand.